संडीला में कारतूसों का प्लांट बनेगा

तैयारी

कानपुर | अभिषेक गुप्ता

विश्वप्रसिद्ध वेब्ले स्कॉट के निर्माता रिवाल्वर के बाद अब कारतूसों को भी मेक इन इंडिया बनाने जा रहे हैं। संडीला में देश का सबसे बड़ा कारतूस प्लांट वेब्ले लगाएगी। 50 एकड़ में बनने वाले इस प्लांट में पहले चरण में लगभग 100 करोड़ रुपये निवेश किए जाएंगे। इस फैक्टरी से हर साल कम से कम छह करोड़ कारतूस निकलेंगे।

इंग्लैंड की वेब्ले को स्वदेशी बनाने वाले स्याल ग्रुप के निदेशक मनिंदर स्याल और रिक्की स्याल ने बताया कि 20 एकड़ जमीन अधिग्रहीत कर ली गई

मेक इन इंडिया

- 100 करोड़ का निवेश होगा, हर साल बनेंगी 6 करोड़ गोलियां
- कानपुर-लखनऊ के स्याल ग्रुप की होगी 51 फीसदी हिस्सेदारी

है। यहां एके 47, एलएमजी, मैकगन सहित 20 तरह की एसाल्ट राइफलों के कारतूस बनेंगे। इसके अलावा सिविलियन के लिए 32 बोर की रिवाल्वर के कारतूसों का भी उत्पादन होगा। प्लांट में पूरा निवेश वेब्ले करेगी। मुख्य रूप से भारतीय सेना को कारतूसों की सप्लाई की जाएगी। इसके बाद यहां से निर्यात किया जाएगा।

मनिंदर स्याल ने बताया कि इस प्लांट में भी 51 फीसदी हिस्सेदारी उनकी होगी और 49 फीसदी वेब्ले की होगी। अगले साल मार्च में गांधीनगर में होने वाले डिफेंस शो में एम्युनिशन को लेकर सरकार के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।

कारतूसों की भारी डिमांडः भारतीय डिफेंस बाजार तेजी से विकसित हो रहा है। ढाई लाख करोड़ से ज्यादा के इस बाजार में कारतूसों की बड़ी भूमिका है। इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि हाल में निकले सरकारी टेंडर के मुताबिक सेना को केवल एक कैलिबर के 13 करोड़ कारतूस चाहिए। हर साल 1.30 करोड़ कारतूस की डिलीवरी सेना मांग रही है।